।। श्री गणेशाय नमः ।।

होली बहार माला

(शास्त्रीय होली : गोस्वामी तुलसीदास जी एवं सूरदास जी के पद)

संकलनकर्ता

बिजयेंद्र नारायण तिवारी

उत्सव तिवारी

।। श्री गणेशाय नमः ।।

होली बहार माला

(शास्त्रीय होली : गोस्वामी तुलसीदास जी एवं सूरदास जी के पद)

संकलनकर्ता

बिजयेंद्र नारायण तिवारी

उत्सव तिवारी

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशक :

Reliable Publishing House

Publisher & Distributor

H.O.: Langar Toli, D. N. Das Lane, Patna - 4
B.O.: 10/360, Lalita Park, Laxmi Nagar,
New Delhi-110 092, (INDIA)
Mob.: 7319808541, 9386957639

© प्रकाशक :

प्रथम संस्करण - २०२६

मूल्य : ₹ ५०/-

—:पुस्तक प्राप्ति स्थान:—

उत्सव तिवारी
ग्राम+पोस्ट – कठार
जिला – बक्सर, बिहार।
फोन : 7783878794

www.bhojpurisahityangan.com

।। श्री गणेशाय नमः ।।

मंगलाचरण

करौं वंदना करिवदन,
करि करजोरि युग पाणि।
श्री शारद से प्रार्थना,
कंठ बसौं अब आनि।।

होरी ग्राम कठार की,
करौं संकलन आज।
श्री गुरुपद रज की कृपा,
सिद्ध होंहि मम काज।।

होरी है होरी है होरी है होरी है, होरी है होरी है ऋतुराज की होरी है।।

होरी है यह गणपति की, होरी है यह उमापति की,
होरी है यह रमापति की, होरी है यह सीतापति की,
होरी है हनुमंत लला की, होरी राधे-श्याम की,
ग्वाल बाल अरु गोपन के संग, सब गोपियन की होरी है।। होरी है. ।।

होरी है यह तुलसीदास की, होरी है यह सूरदास की,
होरी है यह दोहावली की, होरी है यह कवितावली की,
होरी है यह वेदव्यास की, होरी सारी संस्कृति की,
कठार ग्राम के सब जनता संग, जनार्दन की होरी है।। होरी है. ।।

www.bhojpurisahityangan.com

दो शब्द

सदियों से विरासत में मिली भोजपुरी लोकसाहित्य की एक अनूठी परम्परा हमारी भारतीय संस्कृति से जुड़ी चली आ रही है। लोकसाहित्य में लोकगीतों की विशेष भूमिका रही है, जिसकी अभिव्यक्ति जनमानस विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न रूपों में निरुपित करता आ रहा है। हिन्दुओं के महान पर्व 'होली' के अवसर पर 'कठार' ग्राम में गाये जाने वाले आराध्य देवों की स्तुति, उनके कुछ रंग-विहार गीत एवं समस्त नागरिकों द्वारा पावन वसंत ऋतु के आगमन पर व्यक्त किये गये हार्दिक उद्गार का संकलन यहाँ किया जा रहा है, जो चिरकाल से ही प्रेरणा एवं आमोद-प्रमोद के परिचायक रहे हैं।

आधुनिक युग के झंझावात से हमारी संस्कृति आक्रांत हो चुकी है और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे समाज एवं जनमानस के दिलों-दिमाग पर बदस्तूर जारी है। ऐसी परिस्थिति में अनंतकाल से चली आ रही हमारी यह धरोहर भी निश्चित रूप से विलुप्त होने के कगार पर आ खड़ी है, जिसकी रक्षा करना हम प्रबुद्ध नवयुवकों का पुनीत कर्त्तव्य बन जाता है। प्रस्तुत **'होली बहार माला'** का संकलन लुप्त प्राय हो रही हमारी युग-युगांतर की इस सांस्कृतिक धरोहर को चिरकाल तक अक्षुण्ण बनाये रखने का एक प्रयास है।

मैं व्यक्तिगत रूप से उन समस्त व्यक्तियों का ऋणी हूँ जिनके पुनीत सहयोग से इस कार्य का संकलन संभव हो सका है। विशेष रूप से मैं अपने पिता श्री रमाकांत तिवारी जी का ऋणी हूँ जिनके सतत् मार्गदर्शन में ही मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ, साथ ही श्री रामनारायण सिंह जी (उ.टो.) एवं श्री शंकरदयाल सिंह जी का सौजन्य भी मुझे इस कार्य में उनका आभारी बना दिया है। हमारे वे इष्ट मित्र भी श्रद्धा-बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने मुझे बार-बार इस कार्य को संपन्न करने के लिए प्रेरित किया है।

सदियों से बिखरी पड़ी इस धरोहर को एक साथ संकलित करते मुझे अपार आनंद हो रहा है। अपने अध्ययन काल की यह अनुपम भेंट कठार ग्रामवासियों को समर्पित करते हुए मुझे अलौकिक आनन्दानुभूति हो रही है। विश्वास है कि चिरकाल तक यह आपको अपनी संस्कृति से जोड़े रखेगा और तभी मैं अपने इस प्रयास की सार्थकता को समझते हुए अपने आप को धन्य समझूँगा।

वसंत पंचमी, १९९०.

बिजयेंद्र नारायण तिवारी
ग्राम+पोस्ट – कठार,
जिला- बक्सर (बिहार)।

www.bhojpurisahityangan.com

आशीर्वचनम्

हमार नजर के सोझा से 'होली बहार माला' एगो पाण्डुलिपि गुजरल रहे। जवना में अनेक 'होरी आ जोगिरा' के संकलन कइल गइल बा। संपादन आ संकलन आदरणीय बिजयेंद्र नारायण तिवारी जी आ उत्सव तिवारी जी द्वारा भइल बा। पाण्डुलिपि के देखे से इहे बुझाइल कि लोकभाषा आ लोकसाहित्य लोकजीवन खातिर बहुत जरुरी बा। सामान्य रूप से लोक ऊ हऽ जहवाँ एगो क्षेत्र विशेष में कवनो समूह, समाज आ समुदाय निवास करे ला। जवना क्षेत्र में ओकर एगो परिवेश भा वातावरण बनल रहेला, ओह क्षेत्र में ऊ लोगन के संगे भाषा, साहित्य आ संस्कृतियो रहेला। ई सभ लोक जीवन के अभिन्न अंग हऽ। एह से बिलग होके जीवन के कवनो मायने मतलब ना रह जाला।

लोकसंस्कृति के मतलब रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, अन्य तरह के उत्सव आदि। आ दोसर चीज बा लोकसाहित्य। साहित्य चेतना के स्रोत हऽ। एकरा के छोड़ के कवनो समाज के चित्रांकन नइखे कइल जा सकत। लोकसाहित्य परंपरा से अर्जित कइल जाला। ऊ पीढ़ी दर पीढ़ी चलत रहेला। हँ, ई अलग बात बा कि समय के साथ ओह में थोरिका बदलाव दिखाई पड़ेला, जइसे सिक्का चलत-चलत घिस जाला। मौखिक गीत अनुभव के आधार पर सदियन से समाज में चलल आवत रहे, ऊहे लोकगीत के रूप में जानल जाला। लोकसाहित्य में होरी-फगुआ, चइता, सोहर, खेलवना, वियाह गीत अउरी अन्य संस्कारन पऽ गावे वाला गीत होला। लोकसाहित्य के अंतर्गत जवन कुछ उपलब्ध बा ओकर केहू लेखक नइखे। एक बात ध्यान देवे वाला बा कि समय के साथ बदलाव होत रहल बा। अनेक विद्वान लोग एह सबके संकलन आ संपादन भले कइले बाड़ें, बाकि कवनो विशेष रूप से गीत नइखन लिखले। कुछ लोग अब शोध के क्रम में लिखे खातिर प्रयासरत बा। 'होली बहार माला' लोकजीवन के जीवंत बनावे खातिर एगो सार्थक आ सफल प्रयास बा। संकलनकर्ता के कोटि-कोटि साधुवाद।

प्रो.(डॉ.) अयोध्या प्रसाद उपाध्याय
(पूर्व भोजपुरी विभागाध्यक्ष),
(वी. कु. सिं. वि. वि. आरा)।

www.bhojpurisahityangan.com

शुभाशंसनम्

लोकसंस्कृति के जरि बहुत गहरा होला। संचरणशीलता संस्कृति के आपन खास विशेषता ह। एकर ज्ञान कवनो विद्यालय-महाविद्यालय में ना मिले आ ना एकर कवनो प्रशिक्षण केंद्र होला। ई घर-परिवार, समाज आदि में अनायास एक पीढ़ी से दूसरका पीढ़ी में हस्तांतरित होत रहे ला। ई धरोहर के रूप में एक पीढ़ी से दूसरका आ दूसरका से तिसरका के ओर अग्रसर होत रहे ला। तब वर्तमान पीढ़ी के ई कर्त्तव्य हो जात बा कि ऊ एह धरोहर के रक्षा करो। एकरा के विलुप्त होखे से बचाओ।

लोकसंस्कृति के बहुत सारा रूप लोकसाहित्य में संरक्षण पावे ला। पहिले मौखिक परंपरा अतना समृद्ध रहे कि ई स्वभाविक रूप से लोककंठ में संरक्षित हो जात रहें, एकरा लिखित रूप के कवनो जरूरत ना परत रहे, बाकिर समय के साथ एकर क्षरण होखे लागल आ एकरा संरक्षण खातिर एकरा के लिपिबद्ध कइल जरुरी हो गइल। पं. रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ. सत्येन्द्र, पं. हंसकुमार तिवारी जइसन विद्वान लोग सामने आइल आ भोजपुरी लोकसाहित्य के संगृहीत कइल, जवना के चलते आजु लोकसाहित्य बिलुप्त होखे से बाचि गइल।

एही क्रम में हम 'होली बहार माला' के देखत बानीं। होली भारतीय लोकजीवन के रग-रग में समाहित बा। बाकिर चिंता के बात बा कि आधुनिकता के रंग में रंगल आजु के नयका पीढ़ी एकरा से दूर भइल जात बा।

ई संग्रह गाँव-समाज के लोगन खातिर बहुत उपयोगी होई, अइसन हमार बिस्वास बा। संग्रहकर्ता 'बिजयेंद्र नारायण तिवारी' आ 'उत्सव तिवारी' के बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रो.(डॉ.) दिवाकर पाण्डेय
(भोजपुरी विभागाध्यक्ष),
(वी. कु. सिं. वि. वि. आरा)।

www.bhojpurisahityangan.com

आभार

लोकसाहित्य के लोकगायन परंपरा में ऋतुगीत के विशेष महत्त्व बा, जेकरा में फगुआ के स्थान अग्रणी बा। साहित्य के ही समाज के दर्पन मानल जाला। भारतीय संस्कृति के उत्थान में 'वेद','स्मृति' आ 'पुराणन' के विशेष प्रभाव रहल बा। हमार अइसन विचार बा कि अगर हमनी के अपना संस्कृति के बचा लेब जा तऽ आगे आवे वाली पीढ़ी के भी बचाव हो जाई। संस्कृत में एगो सूक्ति बा 'धर्मो रक्षति रक्षितः'[१] अर्थात् जे धर्म के रक्षा करेला धर्म भी ओकर रक्षा करेला। ठीक ओसही जे अपना संस्कृति के बचा लेला ऊ बाचि जाला। मॉरिशस आ फिजी जइसन भोजपुरी भाषी देश एकर प्रत्यक्ष उदाहरण बाड़न स। ओह देशन के लोग आजु अपना संस्कृति के बल पर ओहिजा राज कर रहल बाड़न लोग।

आजु से लगभग 36 बरिस पहिले 'मास्टर पापाजी' श्री बिजयेंद्र नारायण तिवारी जी के दूर-दृष्टि आ सांस्कृतिक प्रेम के परिणाम स्वरुप 'होली बहार माला' के संकलन कइल गइल रहे। 'होली बहार माला' के पाण्डुलिपि के संशोधन में 'डॉ. श्यामबिहारी तिवारी' जी के भी सहयोग मिलल रहे। पुरनका गवनिहार के अभाव में फगुआ उठावे वाला आ क्रम से पद गावे वाला के अभाव होखत गइल। ई बुझाये लागल कि गोल में कम-से-कम चार-पाँच लोग अइसन जरूर होखस जेकरा फगुआ आवत होखे। ई अगर तत्काल संभव नइखे तऽ गोल में चार-पाँच जगह लिखित रूप में फगुआ राखल जाओ, जेकरा के देख के ठीक-ठीक गावल जा सके। एह काम के 'श्री बबन सिंह' जी अपना टंकण संस्थान के माध्यम से पाण्डुलिपि से टंकित करा के कुछ प्रति गोल के समर्पित कइनीं आ ई. राजेंद्र सिंह जी टंकित प्रति के कुछ अउर प्रति थोरे समय बाद ला के गोल के समर्पित कइनीं जवना से काम चले लागल। बार-बार फोटो-स्टेट होत गइला से एह में विकृति आ गइल। कुछ समय बाद मूल प्रति भी भुला गइल। अब हमनी के लगभग ओहिजे पहुँच गइनी जा जहाँ 36 बरिस पाहिले रहीं जा।

अब फिर से 'फगुआ' के सहेजल जरुरी हो गइल, जेकरा से सही आ शुद्ध रूप में नयका पीढ़ी के दिहल जा सके। तब हमरा विचार आइल कि आपन पूर्वज के एह थाती के फिर से सहेजल जाओ। एह क्रम में हमरा हाथे 'मास्टर पापाजी' के हाथ के लिखल कुछ पुस्तिका लागल जवना के हमार 'पिता जी' डॉ. अमरेन्द्र नाथ तिवारी जी सहेज के रखले रहनीं, अब हमार काम अउर आसान हो गइल। जवन-जवन फगुआ गाँव में अबहीं गावल जात रहे ओकरा के तीन बरिस पहिले हम टंकित आ प्रिंट कऽ के गोल के समर्पित कइनीं। धीरे-धीरे प्रिंट (छपल रूप में) के भी आवश्यकता महसूस होखे लागल, तब एह काम में हम लगनीं। गाँव के कई गो बड़-बुजुर्ग से मिल के उहाँ सब के राय से कुछ अउरी फगुआ आ जोगिरा के संकलन कइनीं। एह क्रम में श्री श्रीभगवान सिंह जी आ श्री गोपाल सिंह जी (पू.टो.) के पूर्ण सहयोग मिलल, उहाँ सभे के सुझाव पऽ कुछ अउरी लोग से भी सहायता

www.bhojpurisahityangan.com

प्राप्त कइनीं। अतना पड़ाव पार कइला के बाद आज ई 'होली बहार माला' रउआ सभ के हाथ तक पहुँच रहल बा।

एह परंपरा के आजु के आधुनिक पीढ़ी तक पहुँचावे में जे-जे पुरखा-पुरनिया के योगदान रहल बा उहाँ सभे के याद कइले बिना एकर स्वरुप अधूरा बा। साथे-साथ वर्तमान पीढ़ी के लोग के प्रति भी हमार विशेष आभार बा जिहाँ सभे के पूर्ण योगदान आ समर्पण से ई परंपरा दिनोंदिन आगे बढ़ रहल बा। संस्कृति के संरक्षण में गाँव के सभ लोगन के योगदान रहल बा लेकिन हम व्यक्तिगत तौर पर जिहाँ सभे के देखत बानी भा नाव सुनले बानी ओह में से कुछ लोग के नाव आगे स्मृति खातिर दे रहल बानी। कहल गइल बा कि 'कीर्तिर्यस्य स जीवति' माने जेकर कीर्ति ई धरा पर चल रहल बा, उहे आदमी वास्तव में जिंदा बा। तऽ एह क्रम में बिना उहाँ सभे के नाव अंकित कइले आगे नइखे बढ़ल जा सकत। अपना गाँव में कुछ अइसन परिवार भी बा जे एह संस्कृति के रक्षण में पिछला कई पीढ़ी से आपन योगदान दे रहल बा।

गोस्वामी तुलसीदास जी के सुर में सुर मिला के हम इहे कहऽ तानीं कि **"सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।"**[२] आ **"को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू।।"**[३] वेद के दृष्टि में कहल जाओ तऽ **"अज्येष्ठासो अकनिष्ठा स एते संभ्रातरो"**[४] (मनुष्यों में कोई नीच-ऊँच नहीं, सब भाई-भाई हैं) ई कहे के पीछे हमार भाव ई बा कि ईश्वर के दृष्टि में जब सब केहू एक समान बा तऽ हम के बानीं केहू के बड़ आ छोट कहे वाला। अपना-अपना समय में जे भी हमनीं के पूर्वज (जिहाँ लोग अब स्वर्ग में वास कर रहल बानीं जा) उहाँ सभे बहुत मेहनत कऽ के ई परंपरा के हमनीं तक पँहुचवले बानी जा। हमनीं के गाँव एगो परिवार के जइसन हऽ आ तीनों टोला (दखिन, पूरब आ उतर) आपस में भाई हऽ। हम सुनले बानीं कि तीनों टोला के आपन-आपन गोल रहे आ ऊ अपना सझली दालान पऽ ताल ठोकत रहे लोग।

दखिन टोला में 'सतघरवा' आ 'खुटहा' के सहयोग से गोल खाड़ होत आइल बा। खुटहा में बंका सिंह बाबा ढोलकवहिया रहनीं हा। एह परिवार से नंदजी सिंह, यमुना सिंह, केदार सिंह, जनार्दन सिंह, सुरेन्द्र सिंह, जय प्रकाश सिंह के गायन-वादन में विशेष भूमिका रहल बा। अपना समय में राजेंद्र सिंह (इंजीनियर साहब) के विशेष योगदान रहल बा, इहाँ के गावे-बजावे आ गोल साजे में बड़ भूमिका निभावत रहनीं हा। सम्मत किहाँ अपना डाड़ (कमर) में ढोलक बान्हें में भी तनिको संकोच ना करत रहनीं हा। वर्तमान समय में भी अनंत सिंह, उमेश सिंह आ अमित सिंह अनुग्रह नारायण सिंह (नागा सिंह) एह परंपरा के निभा रहल बा लोग। संगे-संगे साज-बाज के भी संरक्षण कइले बा लोग। सतघरवा में सुखदेव सिंह, राजगृही सिंह, बहोरन सिंह, रामचीज सिंह (गउवाँ बाबा), शंकर दयाल सिंह, बरमेश्वर सिंह, रघुनाथ सिंह, गोवर्धन सिंह, अम्बिका सिंह, कमल सिंह, मुक्ति सिंह, लालबाबू सिंह आदि लोग रहल बा। वर्तमान में देखल जाओ तऽ महेंद्र सिंह, बबन सिंह, परशुराम सिंह, श्रीभगवान सिंह (डफ वादक), तेज प्रकाश सिंह (तेजू सिंह), चन्द्र प्रकाश सिंह (लकड़ सिंह), विनोद सिंह, रामजी सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

(बगौधा सिंह), तेजु सिंह, वीर बहादुर सिंह, बिमल सिंह, तारकेश्वर सिंह (गउवाँ), हरेराम सिंह, हृदयानंद सिंह, विजय सिंह, अवध बिहारी सिंह, अक्षयवर सिंह, नीरज सिंह (ढोलक वादक), धीरज सिंह 'अप्पू'(साधु), मृत्युंजय सिंह, अजय सिंह, शिवजी सिंह, पिंटू कुमार सिंह, चन्दन सिंह, अंकित सिंह आपन योगदान दे रहल बा लोग। गुरुघराना में ऋषिदेव तिवारी (गुदी बाबा), सीताराम तिवारी, पारसनाथ तिवारी, रास बिहारी तिवारी, केशव तिवारी, परमेश्वर दयाल तिवारी, रवीन्द्र कुमार तिवारी, गिरीश तिवारी, चुन्नू तिवारी वर्तमान में रामप्रसन्न तिवारी, ललन जी तिवारी, डॉ. श्यामबिहारी तिवारी, सुरेश तिवारी, अशोक तिवारी, शशिकांत तिवारी,कमलाकांत तिवारी, पुरुषोत्तम तिवारी, रविशंकर तिवारी, राजकुमार तिवारी, आनंद तिवारी, रामेश्वर तिवारी, दयासिंधु तिवारी, त्रिभुवन तिवारी, विनय कुमार तिवारी, भरतजी तिवारी, शिवजी तिवारी, हरेराम तिवारी (नागेन्द्र तिवारी), मनीष तिवारी, प्रवीण तिवारी अउरी पुरोहित घराना में राम सूचित तिवारी (डफ वादक), कमल जी मिश्र आ वर्तमान पीढ़ी में श्याम नारायण तिवारी, दीपनारायण तिवारी, निर्मल तिवारी आदि लोग के सहयोग मिलत आ रहल बा। साथे ही धनराज यादव, श्रीकिशुन यादव, सुनील यादव, जयराम यादव, ललन यादव, ओमप्रकाश यादव (बम भोला), अक्षयलाल राम, धर्मदेव पासवान, शिवकुमार पासवान, गोरख पासवान, के भी ओतने योगदान बा।

पूरब टोला में भी 'अठँगनवा' आ 'सतघरवा' के मेल से गोल बनल रहे। एह में रामपूजन सिंह, राज किशोर सिंह, गौरी शंकर सिंह, रमाशंकर सिंह, तेजनारायण सिंह, अविनाश कुमार सिंह (टूना), विक्की सिंह, कपिलदेव सिंह, रामेश्वर सिंह, कन्हैया सिंह, धीरज सिंह, मनी सिंह, खेदन सिंह, भरत सिंह, संजय सिंह, विवेक सिंह, राघवेन्द्र सिंह, मदन सिंह, मनोज सिंह, गोलू सिंह, कमलेश्वर सिंह (मुन्नू सर), धीरेन्द्र सिंह, राजकुमार सिंह, घुरन सिंह, सूर्यदेव सिंह, श्रीराम सिंह, गोपाल सिंह (ढोलक वादक), परमात्मा सिंह, मिथिलेश सिंह, सुजीत सिंह (ढोलक वादक), अमरजीत सिंह, रामनेवाजा सिंह, बलभद्र सिंह (मुखिया जी), राजबिहारी सिंह, किस्मत कुमार सिंह, कृष्णा कुमार सिंह, कमलेश सिंह, सूर्यपाल सिंह, अशोक सिंह, शक्ति सिंह, यदुनंदन सिंह, वीरेंद्र सिंह, राजेंद्र सिंह, तेजु सिंह, जय प्रकाश सिंह (शाही जी), बंटी सिंह, महेश सिंह, यज्ञनारायण सिंह, रामाशीष सिंह, विजय सिंह, राज दयाल सिंह, रामदेव सिंह (ढोलक वादक), ब्रह्मदेव सिंह, करन सिंह, खखनु सिंह, रामजी सिंह, विनय सिंह, अशोक सिंह, राणा सिंह, पंकज सिंह, मोहित सिंह, बिहारी सिंह, नन्द बिहारी सिंह, राम बिहारी सिंह एह विधा के बढ़ावे में हमेशा आपन योगदान देले बा लोग। पुरोहित घराना में शिवपूजन तिवारी (श्रृंगारी बाबा), रघुनाथ तिवारी, रमाकांत तिवारी, त्रिलोकी नाथ तिवारी, विश्वनाथ तिवारी, सत्येन्द्र नारायण तिवारी, बिजयेंद्र नारायण तिवारी, डॉ. अमरेन्द्र नाथ तिवारी, सर्वेन्द्र नाथ तिवारी (राजू), अमन तिवारी, राजेश्वर पाठक, बरमेश्वर पाठक के भागीदारी फगुआ के रंग के अउर गाढ़ बना देवे ला। साथे ही दरोगा मियाँ, लल्लू ठाकुर, रितन कमकर, श्रीराम कमकर, हरेराम कमकर, कमलेश बारी, भिखारी यादव आदि लोगन के फगुआ के प्रति प्रेम हमरा के विशेषतौर पर प्रभावित कइले बा।

www.bhojpurisahityangan.com

तीनों टोला के संबंध क्रमशः बड़, माझिल आ छोट भाई के जइसन बा। उतर टोला में भी 'अठँगनवा' आ 'सतघरवा' रहल बा। एह में ब्रह्मा सिंह बाबा के नाव विशेष बा। धरोहर के तौर पर इहाँ के बजावल डफ आ ढोलक आजुओ गोल में आवे ला। राधामोहन सिंह, चंद्रशेखर सिंह (मास्टर साहब), दुर्गाशंकर सिंह, रामसुंदर सिंह, विश्वनाथ सिंह (बाचा सिंह), नथुनी सिंह, वासुदेव सिंह, रमाशंकर सिंह, श्याम जी सिंह, रविशंकर सिंह, किशन सिंह, मदन गोपाल सिंह, गौरी शंकर सिंह, शम्भू सिंह, रामनगीना सिंह, उमाशंकर सिंह, अमित कुमार सिंह (भुअर) साथ ही सत्यराम सिंह बाबा अपना समय में सितार वादन से एह परंपरा में शास्त्रीय रस घोलत रहनीं हा। गणेश सिंह, रामजस सिंह, दास सिंह, रामवदन सिंह, जितेंद्र सिंह, धीरज सिंह, बचन सिंह, ठाकुर सिंह, सुदामा सिंह, रामप्रवेश सिंह, निक्कू सिंह, बड़क सिंह, बाचा सिंह, हरि सिंह, जितेंद्र सिंह, अरविंद सिंह, प्रद्युम्न सिंह, चीकू सिंह, रामनारायण सिंह, रघुवंश सिंह, राणा सिंह, रामलखन सिंह, विवेक सिंह, धननारायण सिंह, रामजी सिंह, राजमुनी सिंह, बिजली राय, सुरेश सिंह, तारकेश्वर सिंह 'ब्यास', द्वारिका लाल (गुरु जी), बरमेश्वर लाल, गुदी लाल आ पुरोहित घराना में काशीनाथ तिवारी, सच्चिदानंद तिवारी, श्यामबिहारी तिवारी (लुलु तिवारी), गणेश तिवारी, बचनबिहारी तिवारी [नन्हक तिवारी (डफ वादक)], अवधेश तिवारी, अवध बिहारी तिवारी, सुनील तिवारी, अनिल तिवारी (डिग्गी), सुशील तिवारी (छोटे), रमाशंकर तिवारी, धीरेन्द्र तिवारी, नारायण जी तिवारी, शिवम तिवारी आदि भी एकरा जरि के मजबूत कर रहल बा लोग। कुल मिला-जुला के फगुआ गायन में बहुत लोग के योगदान रहल बा भा अबहीं भी मिल रहल बा। कुछ लोग अइसन भी बानीं जिहाँ के नाव बिस्मृति के कारन नइखे लिखा पाइल, बाकिर उहाँ सभे के भी भूमिका नाव लिखल गइल आदमी लोग से तनिको कम नइखे।

जइसे कवनो मंच के सजावे खातिर कुछ मुख्य आ गौण पात्र होलें ओसहीं गोल के सजावे में भी गवनिहार-बजवनिहार के संगहीं दरी बिछावे वाला, झाल-ढोलक ढोवे वाला आ डफ सेंके वाला के भी स्थान बा, जेकरा गोल में पिछहीं बइठे के मिलेला। बाकिर उनकर सहयोग के भी आपन एगो अलगे महत्त्व बा एह श्रृंखला में उहाँ सभ के भी ओतने आभार बा।

आगे आ रहल पीढ़ी से हमार इहे निहोरा बा कि चिरकाल से आ रहल अपना पूर्वज के संस्कृति आ कला के बचावे खातिर आपन सहयोग जरूर देवे लोग। कहे के माने इ बा कि जइसे हमनी के अपना पूर्वज के छोड़ल थाती के आजु भोग करत बानी जा ओसही हमनी के ई धर्म बनऽता कि एह संस्कृति के विस्तार में आपन योगदान कर्त्तव्य बूझ के दिहल जाओ। हमनी के अपना भीतर हुनर पैदा करे के चाहीं, रुचि लेके कवनो-न-कवनो काम जरूर करे के चाहीं, जइसे केहु गावे सीखो, केहु बजावे सीखो, कुछ लोग एकर नीमन श्रोता बने। काहे कि देखनिहार-सुननिहार के बिना कवनो गवनई सफल ना मानल जाला। रसिक जनता-जनार्दन के भी आपन एगो अलगे महत्त्व बा। फगुआ गायन में गवनिहार- बजवनिहार के संगे सुननिहार के भी जरूरत बा। हमनी के आपन-आपन दायित्व बुझे के चाहीं, भोजपुरी में एगो कहावत बा कि 'आपन बोझा अपनहीं ढोवे के पड़ेला, दोसरा से ढोआइब तऽ

www.bhojpurisahityangan.com

सब बनिहरिये में चल जाई' अर्थात् आपन संस्कृति के बचावे खातिर खुद अपना के खाड़ करे के पड़ी, तबे ई सुरक्षित रह पाई।

प्रेस तक पहुँचे में 'होली बहार माला' के लगभग ३६ बरिस के समय लागल बा। ओह घरी भइल संकलन के अनुसार एह पुस्तिका में २५ गो फगुआ आ फगुई के सहेज के रखल गइल रहे। आजु २०२६ में एह पुस्तिका में २८ गो फगुआ आ ११ गो जोगिरा के भी संकलन कइल जा रहल बा। अंत में अपना गाँवे गवाये वाली आरती के भी संकलन कइल गइल बा।

एह पुनीत पुस्तिका के प्रकाशन भगवान् भोलेनाथ जी के आशीर्वाद से हो रहल बा। साथ ही 'बाबा' स्व.पं. रमाकांत तिवारी जी आ 'बड़का पापाजी' पं. श्री त्रिलोकी नाथ तिवारी जी के भी आशीर्वाद के फल बा जिहाँ के छत्रछाया में ई काम संभव भइल। एकरा प्रकाशन में जवन आशीर्वाद स्वरूप सहयोग प्रो.(डॉ.) अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी आ प्रो.(डॉ.) दिवाकर पाण्डेय जी से मिलल बा ऊ हमरा के आजीवन इहाँ सभे के आभारी बना देले बा। जवन सतत् मार्गदर्शन आ प्रेरणा हमरा 'मास्टर पापा जी' आ 'पिता जी' से संस्कृत आ संगीत के शिक्षा के प्रति मिलल बा बिना ओकरा ई काम के पूरा करे के कल्पना भी नइखे कइल जा सकत। आजु हमरा बहुत ही खुशी हो रहल बा कि सभ लोग के प्रयास से 'होली बहार माला' के प्रकाशन हो रहल बा। रउआ सभ लोग के प्रति हमार बहुत आभार बा। ई परंपरा के सफल बनावे खातिर सम्पूर्ण भोजपुरिया समाज से सहयोग अपेक्षित बा। साथ ही एह परंपरा के आगे बढ़ावे खातिर रउआ सभे के सुझाव आ सहयोग आमंत्रित बा। हमरा तरफ से रउआ सभे के फगुआ के अनघा बधाई आ शुभकामना।

फगुआ, २०२६.

उत्सव तिवारी
संगीत प्रभाकर,(प्र.सं.स.प्र.),
बी.ए.संस्कृत द्वितीय वर्ष,
(काशी हिन्दू वि.वि.वाराणसी)।

www.bhojpurisahityangan.com

विशेष वक्तव्य

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।[५]

हमारी संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। इस समृद्धि को व्यृद्धि[६] की ओर जाने से रोकना हम सबका परम कर्तव्य है। इसी का एक छोटा सा प्रयास है यह 'होली बहार माला' नामक होली संग्रह।

बाल्यावस्था से ही मेरा बाल-मन गायन एवं लेखन के प्रति आकर्षित होता रहा है। अपने ग्राम 'कठार' से ही सन् १९८२ में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर अग्र उच्च शिक्षार्थ 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' में मेरा नामांकन हुआ। वहीं से सन् १९८४ में उत्तर मध्यमा (सं. साहित्य), १९८७ में शास्त्री (सं. साहित्य प्रतिष्ठा), १९८८ में बी.एड. एवं १९९० में स्नातकोत्तर (सं. साहित्य) तक की शिक्षा पूरी हुई। बाल्यकाल में मेरे मन में जो होली संग्रह का विचार रूपी बीज पड़ा था वह अब अंकुरित होना चाहता था। यह कार्य सरस तो था किन्तु सरल न था। धीरे-धीरे उन बड़े-बुजुर्ग के सानिध्य में घंटो बैठकर लेखन कार्य प्रारंभ हुआ जिसके पास यह धरोहर मौखिक रूप में संरक्षित थी। सन् ११९० तक यह कार्य पूर्ण हो गया।

सन् १९९१ में अरुणाचल प्रदेश के सुदूरवर्ती दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी) के पद पर मेरी नियुक्ति हुई और वहाँ योगदान देकर मार्च १९९७ तक मैंने शिक्षण कार्य किया। अनन्तर सन् १९९७ में मेरी नियुक्ति केन्द्रीय विद्यालय संगठन में (प्र.स्ना.शि.) 'संस्कृत' के पद पर हुई। सन् १९९७ से सन् २००३ तक के.वि.ऑइजॉल (मिज़ोरम) में, मार्च २००३ से जुलाई २०१६ तक के.वि.टाटानगर में एवं अगस्त २०१६ से नवम्बर २०२५ तक के.वि.चक्रधरपुर (झारखंड) में लगातार ३५ वर्ष तक शिक्षण कार्य हुआ। अब ३० नवम्बर को मैं सेवा निवृत हो चुका हूँ।

सन् १९९० से २०२५ तक जो बीज अंकुरित होकर प्रस्फुटित एवं पल्लवित भी हो गया था अब वह २०२६ में वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। कहते हैं न कि "समय पाय तरुवर फले, केतक सींचों नीर"। अध्यापन काल में कार्य के दबाव एवं सहयोग के अभाव की वजह से संपादन का कार्य एक दीर्घ अवधि तक लंबित रहा। अब इस कार्य में मुझे मेरे अनुज-पुत्र (भतीजा) श्री उत्सव तिवारी जी का तकनीकि सहयोग एवं टंकण करने से लेकर सभी प्रकार की सहायता प्राप्त हुई। पुत्र श्री उत्सव तिवारी जी का यह कार्य अतीव प्रशंसनीय है। मैं इनके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

मैं ऋणी हूँ अपने प्रातःस्मरणीय पूज्य पिता पं. श्री रमाकांत तिवारी जी का जिनके सतत् मार्गदर्शन एवं सान्निध्य में यह कार्य संपन्न हुआ है। मैं श्री रामनारायण सिंह जी एवं श्री शंकरदयाल

www.bhojpurisahityangan.com

सिंह जी का भी ऋणी हूँ, जिनके निकट जाकर मैं लेखन कार्य पूरा किया हूँ। मैं अपने अग्रज पं. श्री त्रिलोकी नाथ तिवारी जी का आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहा है। मैं अपने अग्रज श्री विश्वनाथ तिवारी जी एवं श्री सत्येन्द्र नारायण तिवारी जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि पुस्तक छपवाने के लिए मुझे इनसे पुनः-पुनः प्रेरणा प्राप्त होती रही है। मैं अपने अनुज डॉ. अमरेन्द्र नाथ तिवारी जी का हृदय से आभारी हूँ जो इस 'होली बहार माला' की पाण्डुलिपि रूपी धरोहर को बहुत ही संजोकर एवं संभाल कर अपने पास सुरक्षित रखे थे। यदि यह पाण्डुलिपि प्राप्त नहीं होती तो यह कार्य दुःसाध्य हो जाता। इतना ही नहीं इस पुस्तक के मुद्रण में, संसोधन कार्य में और मार्ग निर्देशन में आपकी अहम भूमिका रही है। मैं आदरणीय डॉ. श्यामबिहारी तिवारी जी के प्रति ऋणी हूँ जिन्होंने ९० के दशक में पाण्डुलिपि को पुनः-पुनः पढ़कर परिष्कृत करने का पुनीत कार्य किया है। मैं श्री बबन सिंह जी के प्रति आभारी हूँ, जो पाण्डुलिपि को टंकण कराने का सराहनीय कार्य किये हैं। मैं श्री राजेंद्र सिंह जी (अभियंता) का भी हृदयतल से आभारी हूँ जिन्होंने इस टंकित पाण्डुलिपि की प्रति वितरित की जिससे यह परंपरा हमारे गाँव में आज भी संरक्षित रह पाई है। मैं श्रद्धेय प्रो.(डॉ.) अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी (पूर्व भोजपुरी विभागध्यक्ष, वी.कु.सिं.वि.वि. आरा) एवं श्रद्धेय प्रो.(डॉ.) दिवाकर पाण्डेय जी (भोजपुरी विभागाध्यक्ष, वी.कु.सिं.वि.वि. आरा) के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने व्यस्ततम समय में भी इस पाण्डुलिपि को पढ़कर सराहना में दो शब्द लिखें। मैं गाँव के सभी नागरिकों एवं मित्रों का आभार प्रकट करता हूँ जो इस कार्य को संपन्न कराने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहायक रहें हैं।

कालखण्ड अतीत का होने से ब्रज, अवधी एवं भोजपुरी भाषा के कुछ ऐसे पद हो सकते हैं जहाँ लेखन त्रुटि संभव है। सुधी पाठक से विनम्र निवेदन है कि यदि ऐसा है तो कृपया उसे सुधार कर पढ़ें और साथ ही इसकी सूचना दें जिसे अगले संस्करण में सुधार किया जा सके। होली की ढेर सारी शुभकामनाएँ एवं बधाई।

साभार धन्यवाद!

वसंत पंचमी,
२३/०१/२०२६.

बिजयेंद्र नारायण तिवारी
सेवा निवृत (प्र.स्ना.शि.)'संस्कृत',
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

www.bhojpurisahityangan.com

पदानुक्रमणिका

१. सेवहु सिव चरन सरोज रेनु १
२. देखो-देखो, बन बन्यो आजु उमाकंत २
३. खेलत बसंत राजाधिराज ३
४. रघुबर जी से कहिह मेरी ४
५. रघुबर जी से बैर करो ना ५
६. आजु राम-सिय खेलत होरी ६
७. एक राम से खेलब होरी ७
८. अनुज! देखो आये हनुमंत, लंकेस नगर खेले वसंत ८
९. अंजनीसुत मेरो मन भाये ९
१०. अंजनीसुत अति बलवाना १०
११. मोहना मोहि आनि ठगोरी १२
१२. बृज में हरि होरी मचाई १३
१३. बरजो ना जसोदा जी कान्हा १४
१४. साँवरो के चरित सुनोरी १५
१५. बरीजल नाहीं माने मुरारी १६
१६. हरि जी से अस्त्र गहाऔं, आज समर भूमि में १७
१७. राखहु लाज मुरारी, द्रौपदी गोहरावे १८
१८. बजवले बजवले बजवले कन्हैया, मुरली बजवले १९
१९. एक राधा बिनु नंदकिसोर २०
२०. गिरिजा तोरी मति भई भोरी २१
२१. राधा वर खेलन होरी २२
२२. आली स्याम बजावत वीणा २३
२३. सुमिरन २३
२४. सिव-संकर खेले फाग, होरी धूम मची २४
२५. होरी खेले रघुबीरा अवध में, होरी खेले रघुबीरा २४
२६. कैसे खेलूँ फाग काली कामरिया संग २४
२७. मोरे नैनन बीच अबीर, कान्हा डारि गये २५
२८. मोरा फुलगेनवा के साध २५
- जोगिरा २६
- आरती २९

www.bhojpurisahityangan.com

०१. 'सेवहु सिव चरन सरोज रेनु'[७]

सेवहु सिव चरन सरोज रेनु, कल्यान अखिल-प्रद कामधेनु।।

कर्पूर-गौर, करुना उदार, संसार-सार, भुजगेन्द्र-हार।
सुख-जन्मभूमि,महिमा अपार, निर्गुन, गुननायक, निराकार।। से.।।

त्रयनयन, मयन मर्दन-महेस, अहँकार निहार-उदित दिनेस।
बर बाल निसाकर मौलि भ्राज, त्रैलोक सोकहर प्रमथराज ।। से.।।

जिन्ह कहँ बिधि सुगति न लिखी ए भाल, तिन्ह की गति कासीपति कृपाल।
उपकारी कोऽ पर हर-समान, सुर-असुर जरत कृत गरल पान।। से.।।

बहु कल्प उपायन करि अनेक, बिनु संभु-कृपा नहिं भव-बिबेक।
बिग्यान-भवन, गिरिसुता-रमन, कह तुलसिदास मम त्राससमन।। से.।।

www.bhojpurisahityangan.com

०२. 'देखो-देखो, बन बन्यो आजु उमाकंत'[८]

देखो-देखो, बन बन्यो आजु उमाकंत, मानों देखन तुमहिं आई रितु बसंत।

जनु तनुदुति चंपक-कुसुम-माल, बर बसन नील नूतन तमाल।
कलकदलि जंघ, पद कमल लाल, सूचत कटि केहरि, गति मराल।।

भूषन प्रसून बहु बिबिध रंग, नूपुर किंकिनि कलरव बिहंग।
कर नवल बकुल-पल्लव रसाल, श्रीफल कुच, कंचुकि लता-जाल।।

आनन सरोज, कच मधुप गुंज, लोचन बिसाल नव नील कंज।
पिक बचन चरित बर बर्हि कीर, सित सुमन हास, लीला समीर।।

कह तुलसिदास सुनु सिव सुजान, उर बसि प्रपंच रचे पंचबान।
करि कृपा हरिय भ्रम-फंद काम, जेहि हृदय बसहिं सुखरासि राम।।

www.bhojpurisahityangan.com

०३. 'खेलत बसंत राजाधिराज'[९]

खेलत बसंत राजाधिराज, देखत नभ कौतुक सुर-समाज।।

सोहैं सखा-अनुज रघुनाथ साथ, झोलिन्ह अबीर, पिचकारि हाथ।
बाजहिं मृदंग, डफ, ताल, बेनु, छिरकैं सुगंध भरे मलय-रेनु।।

उत जुबति-जूथ जानकी संग, पहिरे पट भूषन सरस रंग।
लिये छरी बेंत सौंधें बिभाग, चाँचरि झूमक कहैं सरसराग।।

नूपुर-किंकिन-धुनि अति सोहाइ, ललना-गन जब जेहि धरइँ धाइ।
लोचन आँजहिं फगुआ मनाइ, छाड़हिं नचाइ, हाहा कराइ।।

चढ़े खरनि बिदूषक स्वाँग साजि, करैं कूटि, निपट गई लाज भाजि।
नर-नारि परसपर गारि देत, सुनि हसँत राम भाइन समेत।।

बरषत प्रसून बर-बिबुध-बृंद, जय-जय दिनकर-कुल-कुमुदचंद।
ब्रह्मादि प्रसंसत अवध बास, गावत कलकीरति तुलसिदास।।

www.bhojpurisahityangan.com

०४. 'रघुबर जी से कहिह मेरी'

रघुबर जी से कहिह मेरी।।

ए हनुमान अंजनी के नन्दन, सुनहूँ संदेस हमारी।
सीस नवाई चरन गहि लीजै,
करिहौं बिनय बहोरी, रामजी से दोऊ कर जोरी ।। रघु.।।

कतक दूरि है बंधु दोउ सेना, उनके चरन रति मोरी।
हनुमंत कहेउ धीर धरु माता,
लंका फूके जैसे होरी, कोटि देवता बलजोरी ।। रघु.।।

सुरपति सुत के दंड दिवइया, तिरहुत में धनु तोरी।
सो भुज बल हम देखत नाहीं,
रावण दुष्ट हरोरी, कहे मिथिलेस किसोरी ।। रघु.।।

जाई जनकपुर धनुहा तोरी, जै-जै सकल करोरी।
तुलसिदास लंका पति मारे,
अबका बिलंब करोरी, कहे राजा जनक किसोरी ।। रघु.।।

www.bhojpurisahityangan.com

०५. 'रघुबर जी से बैर करो ना'

रघुबर जी बैर करो ना ।।

सत जोजन मरजाद सिन्धु के, ना कोई बाँधि सको ना ।
ताहि बाँधि उतरे रघुनंदन,
संग भालु कपि सेना, समर कोई जीति सको ना ।। रघु.।।

होरि अस लंका जारि दियो है, सो प्रति भाग्य बचो ना ।
करि-करि जतन बीर सब हारे,
पावक प्रबल बुझो ना, युक्ति एकहु ना लहो ना ।। रघु.।।

मैं पत्नी बहु भाँति सिखायो, निसीचर कान करो ना।
ले जानकी मिलो रघुबर से,
उनसे समर जितो ना, भागि तिहुँ लोक बचो ना ।। रघु.।।

विविध भाँति समुझाई कंत के, रावण मूढ़ बुझो ना।
तुलसिदास प्रभु तुम्हरे दरस के,
हरि के चरन पकड़ो ना, अचल पिया राज करोना ।। रघु.।।

www.bhojpurisahityangan.com

०६. 'आजु राम-सिय खेलत होरी'

आजु राम-सिय खेलत होरी।।

अबीर गुलाल कुंकुमा केसर, चंदन रगरे जनक किसोरी।
करिहौं तिलक लखन-रघुबर हो, भरत-सत्रुहन देवर जोरी ।। आजु.।।

बाजत ताल मृदंग-झाल-डफ, सिंग नगारा ढोल टिकोरी।
लखन-सत्रुहन बेनु बजावे, नाचे भरत अरु जनक-किसोरी।। आजु.।।

रामजी के हाथे कनक पिचकारी, लछुमन अबीर लिये भरि झोरी।
अवचक चोट किए रघुनंदन, सिया बदन पर केसर बोरी ।। आजु.।।

सीता करति सिंगार सखिन संग, निगमग तिलक दिए सिर रोरी।
मानहु विधुकर बाल सुता हो,जनु उदया पर उदित भयोरी।। आजु.।।

रतन-दुसाला जबहिं राम के, छीन लिए सीता बलजोरी।
ओढ़े जनक-सुता तेहि अवसर, मानहुँ जगमग ज्योति भयोरी।। आजु.।।

इहवाँ खेलत भाइन संग रघुबर, छत्र-मुकुट सिर तिलक दियोरी।
स्रवण सोभित मकराकृत कुंडल, जनु उदया पर उदित भयोरी।। आजु.।।

एहि विधि फागु खेले रघुनन्दन, भूप भवन नृप अवध की खोरी।
तुलसिदास छवि का बरनौं हो, सीता-राम मनोहर जोरी ।। आजु.।।

www.bhojpurisahityangan.com

०७. 'एक राम से खेलब होरी'

एक राम से खेलब होरी, प्रण एही मेरो।।

जाके कर सर धनुष विराजे, अवध नगर की खोरी।
भाल विसाल तिलक हरि माँजे, सोभा सिंधु खरारी।। प्रण.।।

बक्सर जाई के मुनि मन राख्यो, जनकपुरी धनु तोरी।
सब भूपन के मान मरोरी, ब्याहे जनक किसोरी।। प्रण.।।

बनहीं जाइ केंवट के तारे, नयन जयंत के फोरी।
बालि मारी सुग्रीव सखा हो, कपि दल सैन्य बटोरी।। प्रण.।।

लंका जाई विभीषण तारयों, रावण के सिर फोरी।
सब देवन के फंद छुड़ाए, आए अवध बहोरी।। प्रण.।।

ब्रह्मा विष्णु सकल सुर मिली के, अस्तुति करत भयोरी।
तुलसिदास प्रभु तुम्हरे दरस के, चिरंजीव रहे दोउ जोरी।। प्रण.।।

www.bhojpurisahityangan.com

०८. 'अनुज! देखो आये हनुमंत, लंकेस नगर खेले वसंत'

श्री राम काज हेतु सुदिन सोधि, लांघे पयोधि थापे प्रबोधि।
सीय पाय पूजि आसीष पाई, फल अमीय सरिस खाएउ हो आई।।

कानन दल होरी रचि बनाई, घृत तेल बसन बाँधो बँधाई।
लिये ढोल चले संग लोग-लागि, बर जोरि दिये चहुँ ओर आगि।।

आहुतिया घृत किये जातुधान, लह-लमही भ्रामरि भाजाहिं विमान।
नभ तल कौतुक तल लंका विलाप, परि राम पूंज पातकी ए माँहि।।

हनुमान हाँक बस फूल सूर, बार-बार बरनहीं लंगूर।
भई भुवन सकल कल्याण धुनि, पुर जारि बोरि निधि बोरी लूम।।

जानकी ए तोष तोषेउ प्रताप, जय पवन सुवन दल दुअन दाब।
नाचहिं कूदहिं कपि करि विनोद, पियत मद मधुबन मदन मोह।।

प्रभु सहित लखन गहि पाय आई, मन मुदित सहित भेटेउ उठाई।
लखि सयन सजित भइ हिय हुलास, जय-जय जस गावहीं तुलसिदास।।

www.bhojpurisahityangan.com

०९. 'अंजनीसुत मेरो मन भाये'

लाल लंगूर के सोभा बरनौं, तेल फुलेल लगाये।
एक हाथ गदा दूजे धवलागिरी,
मध्य अयोध्या में आये, भरत उठि बाण चलाये।। अं।।

लागत बान गिरे धरती पर, राम राम गोहराये।
सुनत भरतजी बेगि उठि धाये,
ना कोई जनक जनाये, आप आतुर चलि आये।। अं.।।

केकर पुत्र नाम तोरे क्या है, कौन दिसा से आये।
कौन नृपति के करत चाकरी,
काई कारन तुम आये, तात मोसे दे ना बताये।। अं.।।

अंजनि के पुत्र नाम मोर हलिवंत, दखिन दिसा से आये।
राम नृपति के करत चाकरी,
संजीवनि आनन आए, लखनजी के सक्ति सताये।। अं.।।

उठहूँ तात तुम चढ़ो बान पर, बान बिमान चलाये।
लेहूँ संजीवनि देहूँ लखन को,
सोवल बीर जगाये, सखा प्रभु हिय में लगाये।। अं.।।

आयसु पाई चले अंजनिसुत, पल में लंका जाये।
देत संजीवनि लछुमन जागे,
देव सुमन झरि लाये, चूक सबहिं बकसाये।। अं.।।

www.bhojpurisahityangan.com

१०. 'अंजनीसुत अति बलवाना'

अंजनीसुत अति बलवाना ।।

बंदि चरन श्री रामचंद्र के, हरषि चले हनुमाना।
बिनु प्रयास धवलागिरि लेके,
जबहिं अवध नियराना, भरत उठि मारेउ बाना ।। अंज.।।

राम-राम कहि गिरे धरनि जब, भरत सब्द सुनी काना।
हरिजन जानि निकट चलि आए,
पूछत करि सनमाना, तात कहवाँ से आना ।। अंज.।।

रामदूत लंका से आए, नाम मोर हनुमाना ।
लछुमन दुखित सक्ति के लागे,
गिरि औषध कर आना, जात रहों कृपा निधाना ।। अंज.।।

आओ बैठो चढ़ो बान पर, पल में लंका जाना।
सकल काज बेगि तुम कीजे,
बचन मोर परमाना, पवनसुत सुनि मुसुकाना ।। अंज.।।

मेरे भार सहे सर कैसे, अस उपजा अभिमाना।
समुझि राम प्रताप हृदय जब,
तब आए कछु ज्ञाना, विनय किए विविध-विधाना।। अंज.।।

www.bhojpurisahityangan.com

तुम्हरे कृपा बान सम जैहों, करिहों जोरि जुग पाना ।
आयसु देहु मिलौं रघुवर से,
होई काज कल्याना, भरत सुनि अति सुख माना।। अंज.।।

आयसु पाई चले हनुमाना, होए न पाए बिहाना।
देत संजीवन लछुमन जागे,
सकल कटक हरषाना, बहुरि घट आयउ प्राना ।। अंज.।।

परमानंद मिले दोउ भ्राता, सूरन्ह हनेउ निसाना।
तुलसिदास प्रभु तुम्हरे दरस के,
पाई सुभग बरदाना, रसीले भो हनुमाना ।। अंज.।।

www.bhojpurisahityangan.com

११. 'मोहना मोहि आनि ठगोरी'

सखिया के रूप धरे यदुनंदन, आये हमारी खोरी।
कोमल बदन मधुर छवि सजनी,
मोर जिय जाई फँसोरी, प्रेमवस हो गयी भोरी ।। मो.।।

मोहि लिआई गये कुंजनवन, करि कल बल दृग चोरी।
निपट अकेलि जानि मोहि सजनी,
जोबन जोर बहोरी, छैल छवि नन्द किसोरी ।। मो.।।

देखहुँ रे यह नन्द दुलारे, इनसे कोउ ना बचोरी।
गोर गुलाब आकास बदन छवि ,
पारब्रह्म प्रगटोरी, जहाँ तुम जाई फँसोरी ।। मो.।।

तुम चरनन पकड़ोरी लालजी, कर जोरि विनती करोरी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को,
हरि के चरन पकड़ोरी, जहाँ तुम जाई फँसोरी ।। मो.।।

www.bhojpurisahityangan.com

१२. 'बृज में हरि होरी मचाई'

बृज में हरि होरी मचाई ।।
इतसे निकली नवल राधिका, उतसे कुँवर कन्हाई।
खेलत फागु परस्पर हिली-मिली,
सोभा बरनी न जाई, घरे-घरे बाजे बधाई ।। बृज.।।
बाजत ताल मृदंग झाल डफ, ढोलक ओ सहनाई।
उड़त अबीर लाल भये बादल,
रहेउ सकल बृज छाई, मानो मघवा झरी लाई ।। बृज.।।
राधे सान दिए सखियन के, यूथ-यूथ मिली जाई।
लपटि-झपटि मोरे स्यामसुंदर के,
बरबस पकड़ी मँगाई, लाल तो के नारि बनाई ।। बृज.।।
छिन लिए मुख मुरली पीतांबर, सिर सिन्दूर पहिनाई ।
बिंदी भाल नयन बीच काजर,
नकबेसरि पहिनाई, लाल तो के नाच नचाई ।। बृज.।।
सुसुकत है मुख मोरि-मोरि के, कहवाँ गई चतुराई ।
कहवाँ गए तोरे नंद बाबा हो,
कहवाँ जसोमति माई, लाल तो के ले ना छुड़ाई ।। बृज.।।
खेलत गेंद गिरे जमुना में, के मोरा गेंद चोराई ।
हाथ डालि अँगिया बीच ढूंढ़ों ,
एक गए दोउ पाई, लाल मो के चोरी लगाई ।। बृज.।।
बिनु फगुआ लियो जाए न दैहों, करिहौं में कोटि उपाई।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस के ,
तुम हो चोर कन्हाई, बहुत दधि माखन खाई ।। बृज.।।

www.bhojpurisahityangan.com

१३. 'बरजो ना जसोदा जी कान्हा'

बरजो ना जसोदा जी कान्हा ।।

मैं जमुना जल भरन जात है, मारग में अरुझाना।
बरबस आई गागर मोरे फोरे,
लेई अबीर मुसुकाना, सखीन संग देई-देई ताना ।। बर.।।

वाहि समय आए यदुनंदन, घरही में रोदन ठाना।
हाय रे मईया मोके बहुत रिझायो,
नैनन मारि निसाना, उलटि घर ओरहन आना ।। बर.।।

का रे सखी! तोरी मति भई भोरी, अबही त कान्हा नादाना।
का जाने हरि रस की बातें,
खेलत खात अघाना, सखीन तोर जरि जाहु ज्ञाना ।। बर.।।

तू सांचे तुम्हरे सूत सांचे, हमको कहत नादाना।
सूरदास एहि बृज नाहीं बसिहौं,
करीहौं में अपनो ठिकाना, जहाँ हमरो मन माना ।। बर.।।

www.bhojpurisahityangan.com

१४. 'साँवरो के चरित सुनोरी'

साँवरो के चरित सुनोरी ।।

गृह गृह से निकली बृज बनिता, हरसी चले जल ओरी ।
मज्जन हेतु परी जमुना में ,
कोई सांवर कोई गोरी, खेले जल में झकझोरी ।। सां.।।

वाहि समय बृजराज कन्हैया, यमुना तट पहुँचोरी ।
लेकर चीर सबै सखियन के ,
ले गए नवल किसोरी, कदम पर जाई धरोरी ।। सां.।।

दे डुबुकी-उबुकी एक सखिया, सबसे कहत भयोरी।
जमुना तट हम पट नाहीं देखों ,
के मोरे चीर हरोरी, सखिन संग लाज भयोरी।। सां.।।

पुरइनि पत्र पहिरी सब सखिया, कर जोरी बिनती करोरी।
अबकी के चीर बकसु मन मोहन ,
होइबो में चेरी तुम्हारी, कहत अस राधा प्यारी ।। सां.।।

बोले स्याम मधुर रस बतियाँ, तुम सब लाज तजोरी ।
लाज छाड़ी सनमुख होई चितओ ,
तब चीर पइहो बहोरी, टेक यह जानहु मोरी।। सां.।।

www.bhojpurisahityangan.com

१५. 'बरीजल नाहीं माने मुरारी'

बरीजल नाहीं माने मुरारी।।

मैं जमुना जल भरन जातु हौं, बीच मिले गिरधारी.
गागरि फोरि मोरि बहियाँ मरोरे,
मोतिन के लर तोरी, कहे बृजराज किसोरी ।। बरी. ।।

ओरहन देन चली सब सखियाँ, नंद जसोमति खोरी.
बरीज जसोदा अपना लाल के,
कान्हा करेले बटवारी, बृज में रहल भइले भारी ।। बरी. ।।

काली कम्बल के ओढ़वईया, बातें करत हजारी.
एही मोहन सब गइया बेचइहें,
घरवा पीताम्बरी सारी, मानो मोहन कहल हमारी ।। बरी. ।।

राजनीति के मरम न जाने, गउआ चरावन हारी.
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस के,
हरि के चरन बलिहारी, राधा तुम निपट गँवारी ।। बरी. ।।

www.bhojpurisahityangan.com

१६. 'हरि जी से अस्त्र गहाऔं, आज समर भूमि में'

हरि जी से अस्त्र गहाऔं, आज समर भूमि में।।

समर मध्य प्रन करत भीष्म जी, पांडव दल विनसाओं।
बानन मारी विदारहीं रथ तें, सोनित नदी बहाओं ।। हरि.।।

जो न करौं नहीं भक्त कहाओं, क्षत्रिय धर्म नसावों ।
मातु गंग के दूध लजाओं, सांतनु सुत न कहावों ।। हरि.।।

इतना कहि रथ हांक दियो है, समर मध्य चली आयो।
बाणन मारी महा युद्ध किन्हो, प्रलय काल चली आयो ।। हरि.।।

निज प्रन तोड़ी भक्त प्रन राखत, त्रिभुवन पति यदुराई।
चक्र लिए हरि कूद पड़ो है, भीष्म जी सीस नवाई ।। हरि.।।

www.bhojpurisahityangan.com

१७. 'राखहु लाज मुरारी, द्रौपदी गोहरावे'

राखहु लाज मुरारी, द्रौपदी गोहरावे ।।

लट छटकाई करुनाकर द्रौपदी, बहत नयन जल धारा ।
वाहि समय त्राहि-त्राहि पुकारी, चीर दुःसासन हारी ।। रा. ।।

बड़-बड़ भूप सकल रनधीरा, बैठी सभा में आई।
भीष्म, द्रोण, कर्ण व्रतधारी, इनहु धरमवा के छाड़ी ।। रा. ।।

जेवना परोस दिए रानी रुक्मीनि, जेवहुं प्रभु जेवनारी ।
भारी भीर परी सेवक पर, छाड़ी चले जेवनारी ।। रा. ।।

हाथ लिए प्रभु चक्र सुदर्सन, माथे मुकुट संवारी।
सुर के स्वामी अंतर्यामी, बेगिही गरुन सिधारी ।। रा. ।।

www.bhojpurisahityangan.com

१८. 'बजवले बजवले बजवले कन्हैया, मुरली बजवले'

बजवले बजवले बजवले कन्हैया, मुरली बजवले।
जमुना मुंहे जाई मुरली बजवले।।

यमुना के तीरे-तीरे गइया चरवले ,
रहसि-रहसि गुन गवले कन्हैया ।। बज.।।

श्री वृन्दावन- कुँज गलीन में ,
अनुपम रास रचवले कन्हैया ।। बज.।।

डफ करताल मृदंग-मजीरा ,
ढोलक मधुरी बजवले कन्हैया ।। बज.।।

राधे-मोहन दोउ नृत्य करत हैं ,
सूरदास पद गवले कन्हैया ।। बज.।।

www.bhojpurisahityangan.com

१९. 'एक राधा बिनु नंदकिसोर'

एक राधा बिनु नंदकिसोर एहो।
बिनु नंदकिसोर का संगे होरी खेले हो।।

आम के डाली कोयल बोले, बन बोलेला मोर एहो,
बन बोलेला मोर, का संगे होरी खेले हो।। एक.।।

तू पिया बसत पहाड़ पर, हम देस की ओर एहो,
हम देस की ओर, का संगे होरी खेले हो ।। एक.।।

जैसे पपीहरा बूँद हरे, चितवे चहुँ ओर एहो,
चितवे चहुँ ओर, का संगे होरी खेले हो ।। एक.।।

आवन-आवन कहि गए, बिलमे कौनी ओर एहो,
बिलमे कौनी ओर, का संगे होरी खेले हो ।। एक.।।

सूर स्याम प्रभु साँवरो, धुन मुरली की ओर एहो,
धुन मुरली की ओर, का संगे होरी खेले हो।। एक.।।

www.bhojpurisahityangan.com

२०. 'गिरिजा तोरी मति भई भोरी'

आई बरात गाँव निगिचाए, भूत पिसाच खड़ोरी।
मुंडमाल मुख चन्द्र विराजे,
बाघम्बर लटकोरी, हलाहल कंठ धरोरी।। गिरिजा.।।

साँप देखत आजु मैं मरी जैहों, अब कोई काई करोरी,
वाहि सोचि मोरि जिया घबड़ाए,
विधिना काई रचोरी, वृद्ध वर बैल चढ़ोरी ।। गिरिजा.।।

पारबती माता समुझावे, समुझ मातु बुझ मोरी,
तीनुलोक के भोग बसत है,
सो वर मोहि मिलोरी, ध्यान संकर के धरोरी ।। गिरिजा.।।

ध्यान धरो सुमिरौ उनहीं के, पूज्यों महादेव गौरी,
तुलसिदास प्रभु तुम्हरे दरस के,
हरि के चरण पकड़ोरी, ध्यान संकर के धरोरी ।। गिरिजा.।।

www.bhojpurisahityangan.com

२१. 'राधा वर खेलन होरी' (बारहमासा)

राधा वर खेलन होरी।।

फागुन फागु पिया संग खेलौं, चैत खेलौं बरजोरी।
चढ़त बैसाख ग्रीष्म ऋतु आये,
जेठ में धूप चलोरी, पिया मुख मलिन भयो री ।। राधा.।।

चढ़त आषाढ़ घटा घन गरजे, सावन देत झकोरी।
भादो रिमझिम बूँद बरिसले,
आश्विन आस लगो री, कंत परदेस गयो री ।। राधा.।।

कार्तिक कंत विदेस में छाये, अगहन मास बीतो री।
पूष के जाड़ा कलपि बितइहौं,
माघ में भाग लड़ोरी, पियाजी से मिलन भयो री ।। राधा.।।

बारह मास बिताई सखी रे, तब सैयाँ आई मिलो री।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस के,
हरि के चरन पकड़ो री, बिरह सब दूरि भयो री ।। राधा.।।

www.bhojpurisahityangan.com

२२. 'आली स्याम बजावत वीणा'

माघ मास हम मकर नहइनी, सूर्य वरत मै कीन्हा।
हाय दइब तोर का हम बिगड़नी, छोट बलम मोहि दीन्हा।। आली.।।

जइसे अन बिनु प्राण दुखी भये, तड़पत जल बिनु मीना,
छोट बलम के नारि दुखी भई, चढ़त फागुन मस्त महीना।। आली.।।

करिके श्रृंगार पलंग चढ़ बैठूँ, अंग ही अंग रस भीना,
चोलिया के बंधन तड़कन लागे, जोबन जात नगीना।। आली.।।

मती रोवऽ तू नारि सुलक्षण, मती कर बदन मलीना,
छोट से जे बड़े होत हैं, सूर स्याम कह दीना।। आली.।।

२३. 'सुमिरन'

सुमिरो सिव संकर प्रमथ नाथ, जेहि के सुमिरन से अचल काम।
गाया गजाधर नाथ सुमिर हौं, काशी विशेश्वर नाथ।
पार्वती के लेहूँ नाम, सिवसंकर जी के धरहूँ ध्यान।
गणपति षटबदन के लेहूँ नाम, कहे तुलसिदास मम हरहूँ त्रास।।

www.bhojpurisahityangan.com

२४. 'सिव-संकर खेले फाग, होरी धूम मची'

सिव संकर खेले फाग, होरी धूम मची।।
एक ओरी खेलत सिव अड़भंगी, एक ओरि भूत बैताल ।। होरी.।।
गौरी सखिन संग अबीर उड़ावे, सिव जी उड़ावेले खाक।। होरी.।।
डिमिक डिमिक सिव डमरू बजावे, नाचत भूत बैताल ।। होरी.।।
तुलसिदास छवि का बरनो हौं, उमगी उमगी अनुराग ।। होरी.।।

२५. 'होरी खेले रघुबीरा अवध में, होरी खेले रघुबीरा'

होरी खेले रघुबीरा अवध में, होरी खेले रघुबीरा ।।
केकरा हाथे कनक पिचुकारी, केकरा हाथे अबीरा ।। अवध में.।।
रामजी के हाथे कनक पिचुकारी, लछुमन हाथे अबीरा ।। अवध में.।।
केकर भिजेला लट-पट पगिया, केकर भीजेला चीरा ।। अवध में.।।
रामजी के भीजेला लट-पट पगिया, सीता के भीजेला चीरा।।अवध में.।।

२६. 'कैसे खेलूँ फाग काली कामरिया संग'

कैसे खेलूँ फाग काली कामरिया संग।।
कारी मुकुट कारी बनमाला, करीहिं गात तोहारि ।। काली.।।
तू त ढोटावाना नन्द बाबा के, मैं बृषभान दुलारि ।। काली.।।
हार चमेली के भार लगतु है, वैसे मैं सुकुमारि ।। काली.।।
सूर स्याम कहति अस राधा, मोहन सुनि मुसुकात ।। काली.।।

www.bhojpurisahityangan.com

२७. 'मोरे नैनन बीच अबीर, कान्हा डारि गये'

मोरे नैनन बीच अबीर, कान्हा डारि गये ।।

भरि पिचुकारी मोरे मुख पर मारे, भींजि गइल तनचीर ।। कान्हा.।।

बरीज रहौं बरीजल नहीं माने, आखिर जाति अहीर ।। कान्हा.।।

२८. 'मोरा फुलगेनवा के साध'

मोरा फुलगेनवा के साध, ए सइयाँ बगिया लगा दऽ ।।
बाग लगा दऽ बगइचा लगा दऽ, बीचे-बीचे निबुआ अनार।। ए सइयाँ।।
फूल लोढ़े गइनी हो ओही फूल बगिया, बेस अटकेली डाढ़।।ए सइयाँ।।
बाट-बटोहिया हो तुहू मोरा भईया, बेसर देहु न छोड़ाई।। ए सइयाँ।।
बेसर के छोड़ाई का देबु धनिया, लेबो में निबुआ अनार।। ए सइयाँ।।

www.bhojpurisahityangan.com

'जोगिरा'

{1}

एक समय में रावण राजा, लंका नगरी महान।
एक समय में उस लंके को, फूँक दिये हनुमान।।

{2}

बक्सर में बाढ़ आइल, गंगाजी के पानी।
सारा बक्सर बह गइल, किला बा निसानी।।

{3}

सवाल - कहाँ तू स्नान किया है, कहाँ पसारा धोती ?
वाह जी वाह.., वाह खेलाड़ी वाह..।
कहाँ तू स्नान किया है, कहाँ पसारा धोती ?
किसने तुमको जन्म दिया है, कौन पढ़ाया पोथी ?
जोगी वाह-वाह.., जोगी वाह-वाह.., जोगी वाह-वाह..।

जवाब - गंगा में स्नान किया है, रेत पसारा धोती।
वाह जी वाह.., वाह खेलाड़ी वाह..।
गंगा में स्नान किया है, रेत पसारा धोती।
मात-पिता ने जन्म दिया है, गुरु पढ़ाया पोथी।
जोगी वाह-वाह.., जोगी वाह-वाह.., जोगी वाह-वाह..।

{4}

सवाल - कऽ गज के जोड़ा-जामा, कऽ गज के फेटा ?
कऽ घाट के पानी पीया, कऽ बाप के बेटा ?

जवाब - दस गज के जोड़ा-जामा, बीस गज के फेटा।
सौ घाट का पानी पीया, एक बाप का बेटा।।

www.bhojpurisahityangan.com

{5}

सवाल - कौन देश का राजा अच्छा, कौन देश की रानी ?
कौन देश का बगुला अच्छा, कौन देश की बानी ?

जवाब - पूर्व देश का राजा अच्छा, पश्चिम देश की रानी।
दक्षिण देश का बगुला अच्छा, उत्तर देश की बानी।।

{6}

छपरा में मैं खपड़ा देखा, गढ़ देखा नेपाल।
काशीजी में लौंडा देखा, काली टोपी वाल।।

{7}

रामनगर में राम बिराजे, कलुआगढ़ में मीरा।
काशीजी में साधु-फकीर, ढोलक बोले धीरा।।

{8}

नया साल के होली आइल, नया बनल सरकार।
छेरिये-भेंड़िये हर चली तऽ, बैल के काऽ दरकार।।

{9}

राजा बनले सिंह, उनकर मंत्री भइल बिलार।
ई राज कव दिन चली, राज के भइल उजार।।

{10}

रामराज में लड्डू बटाइल, कृष्णराज में घीऊ।
नितीश राज में चोरिका दारू, कोन काट के पिऊ।।

{11}

ऊपर लपके बीच में टपके, भुई पसारे अंडा।
ई बुझवलिया बुझ के तू, गोरी उठइहा हंडा।।

www.bhojpurisahityangan.com

बाप के नाव से पूत के नाव, नाति के नाव कुछ अवर।
ई बुझवलिया बुझ के तू, पांडे उठइहा कवर।।

जेही मद से हथिया माते, तेलिया डाले घानी।
ए पांडे तू कवर उठावऽ, गोरी भरस पानी।।

★★★

www.bhojpurisahityangan.com

'आरती'

आरती लागे हो, ए लाल रउरी आरती लागे।
आरती लागे हो, ए लाल रउरी आरती लागे।
लाल केथिन के दीयरा बने, केथि करि बाती।
आहे केथी के तेल चुआई के हो,
केथी के तेल चुआई के, बारो सारी राती हो।
ए लाल रउरी आरती लागे,
आरती लागे हो, ए लाल रउरी आरती लागे।
हो आहे केथी के तेल चुआई के हो,
केथी के तेल चुआई के, बारो सारी राती हो।
ए लाल रउरी आरती लागे,
आरती लागे हो, ए लाल रउरी आरती लागे।। x2

लाल ए 'तन' के दीयरा बने 'मनसा' केरि बाती।
आहे प्रेम के तेल चुआई के हो,
प्रेम के तेल चुआई के, बारो सारी राती हो।। ए लाल.।।

लाल सावन लाल भादो बरसा रितु आई।
आहे स्याम घटा घन घेरि के हो,
स्याम घटा घन घेरि के, मेघवा झरी आये हो।। ए लाल.।।

लाल सेज में डासो स्याम के, फुलवा छितराई।
आहे पंथ में ढूँढू स्याम के हो,
पंथ में ढूँढू स्याम के, अजहूँ नहीं आये हो।। ए लाल.।।

www.bhojpurisahityangan.com

सन्दर्भ

१. मनुस्मृति (अ.८ श्लोक १५)।
२. रामचरितमानस, बालकाण्ड (८/१), गीताप्रेस, गोरखपुर।
३. रामचरितमानस, बालकाण्ड (२१/२), गीताप्रेस, गोरखपुर।
४. ऋग्वेद संहिता (५.६०.५)।
५. भर्तृहरि नीतिशतक (१२)।
६. लघुसिद्धांतकौमुदी (९०८), भैमी व्याख्या(४), भैमी प्रकाशन।
७. विनय पत्रिका, पद सं. १३ (राग वसंत), गीताप्रेस, गोरखपुर।
८. विनय पत्रिका, पद सं. १४ (राग वसंत), गीताप्रेस, गोरखपुर।
९. गीतावली, पद सं. २२ (राग वसंत), गीताप्रेस, गोरखपुर।

★★★★★

www.bhojpurisahityangan.com

बिजयेंद्र नारायण तिवारी

जन्मतिथि : ०२/११/१९६५.
पिता : पं. रमाकांत तिवारी।
माता : जीताना देवी।
शिक्षा : एम.ए.(संस्कृत), बी.एड.,(का.हि.वि.वि.वाराणसी)।
सम्प्रति : सेवानिवृत प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय संगठन।
निवास : ग्राम+पोस्ट– कठार, जिला– बक्सर (बिहार) ८०२१११.

उत्सव तिवारी

जन्मतिथि : २४/०३/२००६.
पिता : डॉ. अमरेन्द्र नाथ तिवारी।
माता : नीलिमा तिवारी।
शिक्षा : संगीत प्रभाकर (२०२६), प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज।
बी.ए.(संस्कृत) द्वि.वर्ष (अध्ययनरत) का.हि.वि.वि. वाराणसी।
निवास : ग्राम+पोस्ट– कठार, जिला– बक्सर (बिहार) ८०२१११.
संपर्क : मो.नं.- +91 7783878794
ईमेल- utsav.tiwari24825@gmail.com

प्रकाशक :
Reliable Publishing House
Publisher & Distributor
H.O.: Langar Toli, D. N. Das Lane, Patna - 4
B.O.: 10/360, Lalita Park, Laxmi Nagar,
New Delhi-110 092, (INDIA)
Mob.: 7319808541, 9386957639